IJAER/March-April 2016/Volume-5/Issue-2 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

संस्कृत साहित्य मे नारी के विविध स्वरूप

डॉ. कृष्णा गोड

सह. आचार्य संस्कृत राज. कला महाविद्यालय

सीकर, राज.

नमो देव्यै महादेव्यै षिवायै सततं नमः

संस्कृत भाषा विषाल महासागर की तरह अत्यंत विस्तरित है जिसमे हर क्षेत्र में कार्य हुआ है। यज्ञ हवन हो या तकनिकी षिक्षा पुरूष हो या महिला, नृत्य संगीत हो या विधि हर क्षेत्र में संस्कृत भाषा में असीम ज्ञान भरा पड़ा है यहां पर हम नारी के विविध स्वरूपों पर विहंगम् दृष्टि डालते है।

1. कन्या

   सर्वप्रथम जव वह धरती पर जन्म लेती है उसे कन्या कहा जाता है। ''कमयास्यति इति कन्या'' अर्थात विवाह के उपरांत यह किसकी अर्धंगिनी बनेगी यह तय नही होता। अतः कन्या कहलाती है। भारत मे कन्या को देवी माना जाता है और उसका सम्मान किया जाता है। नवरात्रा में तीन वर्ष से नौ वर्ष तक की कन्याओं का पूजन कर उन्हे भोजन करवाकर दक्षिणा आदि देकर उनके पांव छूकर आषिर्वाद लेने की प्रथा है।

   यदि कोई अपराधी प्रवृति का हैवान बना मनुष्य किसी कन्या पर कामुक दृष्टि डालकर अपराध करता है तो उसे कठोर दंड देने की व्यवस्था है।

2. बाला

   16 साल की लड़की को बाला कहा गया है। यह रूप एवं लावण्य सम्पन्न बालिका होती है। किंतु सदाचारिणी सदैव अपने चरित्र की रक्षा करती है।

3. युवती

   20 वर्ष की बालिका को संस्कृत मे युवती कहा गया है। एसी कन्या के लिये माता पिता वर की तलाष षुरू कर देते है। राजा एवं सम्पन्न परिवारों मे स्वयंवर की प्रथा भी प्रचलित रही है तथा आज भी है। किंतु माता पिता बच्ची को उसके योग्य आठ दस वर दिखाकर बालिका की पसंद से किसी एक को वरण हेतु कहकर बिटिया का विवाह सम्पन्न कर पराये घर भेज देते है।

4. वधु

विवाह के समय से वह वधु कहलाने लगती है। वत् हू इति वधु अर्थात पति के अनुरूप ढल जाये वह वधु कहलाती है। इसी प्रकार वर का अर्थ है श्रेष्ठ। माता पिता बच्ची के लिये श्रेठतम वर खोजने का प्रयास करते है। किंतु विवाह पूर्व बच्ची की सहमति अवष्य लेनी होती है। जैसा कि हम जानते है हमारे भारत वर्ष मे आठ प्रकार के विवाह प्रचलित रहे है। कई बार लड़की स्वयं ही वर का चयन कर गांधर्व विवाह कर लेती है। यथा अभिज्ञानषाकुन्तलम नाटक मे षकुन्ला राजा दुष्यन्त से गांधर्व विवाह कर लेती है। किंतु महर्षि कण्व क्रोधित न होकर इस बात से संतुष्ट है कि कन्या ने योग्य वर को चुना है। वह कहते है

''धूमाकुलिता दृष्टिरपि यजमानस्य पावके एव आहुती''

अर्थात स्वयं चुनकर भी योग्य वर ही चुना है। अतः मैं संतुष्ट हूं। वधु रूप मे आ जाने पर स्त्री को क्या करना चाहिए यह भी महा कवि कालीदास महर्षि कण्व के मुहं से षकुन्तला के माध्यम से समस्त स्त्री जाति को समझा रहे है।

1. षुश्रूषस्व गुरून् कुरू प्रिय सखी वृत्तिं सपत्नी जने
   भर्तुर्विप्रकृतापि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमय।

   भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी

   यान्तेयवं गृहिणी पदं युवतयों वामा कुलस्याधयः।।

उक्त ष्लोक मे पारिवारिक षांति का मूलमंत्र विवाहिता के मानस में प्रतिष्ठापित कर दिया गया है। वह भलीभांति समझ जाती है कि यह ही षांति का सोपान है। जिसपर चलकर उसे गृहस्वामिनी बनना है।

1 रूकमणी ने कृष्ण से, पार्वती ने भोले नाथ से स्वेच्छा से विवाह किया था। 2 सीता ने स्वयंवर मे राम को चुना तथा द्रोपदी ने अर्जुन को चुना किंतु दोनो ने पिता की रखी षर्त पूरी कर देने पर ही यह कदम उठाये।

3 वासवदत्ता ने राज्य की भलाई के लिये उदयन का पदमावति से विवाह होने दिया जबकि 4 राम ने एक पत्नी वृत रखा।

5. <u>मां</u>

   पत्नी के उपरांत स्त्री अपनी सास की बहु और फिर संतान उत्पन्न होने पर मां बन जाती है और मां बनने पर ही वह पूर्णतया को प्राप्त करती है।

   ''ठुमक चलत रामचन्द्र की भांति अपने बच्चो को देखते हुए, पालते हुए अधेड़ हो जाती है और बच्चो के विवाह के उपरांत वह सास मे परिवर्तित हो जाती है।

6. <u>सास</u>

   5 बधुन्ह समेत देखि सुत चारी
   परमानंद मगन महतारी
   पुनि पुनि सिय राम छवि देखी

मुदित सफल जग जीवन लेखी

इस प्रकार बहुओं के आने पर आनंद लेती हुई परमसुख को प्राप्त होती है जैसे कि बहुओं सहित चारो पुत्रो राम लखन, भरत षत्रुघन को देखते हुए माताऐं परमानंद मे मगन हो रही है। सीता राम जी को बार बार देखकर अपने जीवन को धन्य मान रही है।

परिवार मे महिलाओं द्वारा वृथा हंसी मजाक में अनावष्यक बेर भी कभी कभी बन जाते है जैसे द्रोपदी ने दुर्योधन को ''अंधो की संतान अंधी'' कहकर परिवार मे अनुचित दुखद वातावरण एवं दुषित परिणाम का कारण बनी।

7. <u>विदुषि</u>

सांस्कृति साहित्य में बताया गया है कि विदुषि भी हुआ करती थी उन्हे विद्या अध्ययन का अधिकार प्राप्त था। गार्गी, लोपा मुद्रा तत्कालीन विदुषियां थी।

पण्डिता क्षमाराव भी संस्कृत की अच्छी पण्डित रही है। मण्डन मिश्र की पत्नी भारती को सरस्वती का अवतार माना गया है। उनके विद्धवता षंकराचार्य से षास्त्रार्थ मे प्रकट हुई।

पराक्रम में हम मां दुर्गा का वर्णन भी संस्कृत साहित्य मे पाते है।

6 या दैवी सर्वभूतेषु षक्ति रूपेण संस्थिता

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः

दुर्गा को जगत की माता माना गया है। स्तुति मे कहा जाता है।

देवी प्रपन्नार्ति हरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।

प्रसीद विष्वेष्वरी पाहि विष्वं त्वमीष्वरी देवी चराचस्य।।

अंत में सांस्कृति साहित्य के अनुसार यह ही समझाया जाता है कि

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्तें रमन्ते तत्रदेवता।''

अर्थात जिस घर मे नारी का सम्मान होता है वहा समस्त खुषीया स्वतं ही चली आती है।

डॉ. कृष्णा गोड

सह. आचार्य संस्कृत

राज. कला महाविद्यालय

संदर्भ ग्रंथ

नाम	लेखक	प्रकाषक
संस्कृत साहित्य का इतिहास	आचार्य बलदेव उपाध्यय	चौ.सु.भा. प्रकाषन
अभिज्ञान षाकुन्तलम्	कवि कालिदास	
भारती संस्कृति	श्री कृष्ण ओझा	अभिषेक प्रकाषन चौड़ा रास्ता जयपुर